भविष्योन्मुखी चुनौतियों के सन्दर्भ में डॉक्टर ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का ज्ञान–मीमांसात्मक अध्ययन।

A

SYNOPSIS

SUBMITTED FOR THE PARTIAL

FULLFILLMENT FOR

THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY (Ph.D)

IN EDUCATION

BY MAHANAND MAHTO

UNDER THE SUPERVISION OF

DR. ARUN KUMAR

COLLEGE OF EDUCATION

IIMT UNIVERSITY, MEERUT

YEAR-2020

प्रस्तावना

शिक्षा हाल के वर्षों में विकसित हुई है और अधिगम कक्षाओं, पाठयक्रम, शिक्षाषास्त्र, शिक्षार्थी प्रोफाइल और समय प्रणाली की विभिन्न धारणाओं को सामने ला रही है, जिसका उद्देष्य छात्रों को बेहतर और प्रभावी शिक्षा देना है। छात्र और अभिभावक इस डिजिटल युग में बहुत अधिक उम्मीद करते हैं जहां ''समग्र शिक्षा'' केवल एक प्रचलित शब्द नहीं है, बल्कि नया आदर्श है। अधिगम का विस्तार छात्रों को उनके दिमाग के दायरे की खोज करने के लिए किया गया है एवं इसकी सीमाएं अनंत है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामान्य से परे सोचे और अलग–अलग शैलियों के शिक्षण को अपनाएँ, जो छात्रों को खुष नहीं करते है, बल्कि विभिन्न बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कौशलों को आत्मसात करते हैं। माता–पिता अपने छात्रों की सीखने की यात्रा में अधिक शामिल होते है और जब वे अपने बच्चे की शिक्षा की बात करते हैं, तो वे अपने पैसे की कीमत की माँग करते है।

बदलते परिवेश और अपेक्षाओं के साथ–शिक्षक, जो अक्सर कक्षाओं में शिक्षा का पहला चेहरा होते है, से भी तेज परिवर्तन लाने की उम्मीद की जाती है। पिछले कुछ दशकों में उन्हें जिन चुनौतियों का सामन करना पड़ा, वह भी शिक्षा प्रणाली में बदलाव के साथ बराबरी पर आ गई हैं। 21 वीं सदी में शिक्षकों के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों पर एक नजर।

1. वैयक्तिकरण

छात्र अब अपनी समझ से परे सीखने को मजबूर नहीं है। इसकी बजाये, शिक्षण को उनकी अधिगम की शैली के अनुसार छात्रों को समझने में मदद करने के लिए समायोजित किया जाता है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अब छात्रों के सीखने की शैली के आधार पर उनके शिक्षण के तरीके और आंकलन को निजीकृत करें, जो छात्र–केंद्रितअधिगम की नींव रखें। विभिन्न शिक्षण शैलियों को एक साथ जोड़ा जाता है, जो निष्चित समयावधि के साथ, वैयक्तिकरण को चुनौतीपूर्ण बनाता है।

2. **प्रौद्योगिकी का सही उपयोग करना**

शिक्षा में डिजिटल प्रेरण कक्षा में कम्प्यूटर लाने, या डिजिटल गृह–कार्यदेने से कहीं आगे जाता है। कक्षाओं में डिजिटलाइजेषन अधिक आंतरिक अनुकूलन जैसे कि पिलप्ड अधिगम, मोबाइल अधिगम एआई आधारित निर्णय लेने, डेटा प्रबंधन, ई–अधिगम, विजुअलअधिगम, डिजिटल आकलन, रिकॉर्ड रखने आदि का विस्तार करता है। दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग शिक्षा को दुनिया के लिए चुनौतीपूर्ण बनाता है। आज के शिक्षकों को इस चुनौती के अनुसार बदलना होगा।

3. कक्षा प्रबंधन

कक्षा को नियंत्रण में रखने के रूप में कक्षा प्रबंधन अक्सर गलत समझा जाता है। हालांकि वास्तविकता में, शिक्षकों को यह सुनिष्चित करने की आवष्यकता होती है कि उनकी शिक्षण रणनीतियों विभिन्न शिक्षण शैलियों और व्यवहारों के छात्रों को विचलित होने से बचाती है, और यह कि वे कक्षा में संगठित, चौकस, केन्द्रित और रूचि रखते है, और वास्तव में सीख रहे हैं। सीखने की रणनीति बदलने से एक कक्षा की गतिषीलता भी बदल जाती है, जिससे कक्षा प्रबंधन पहले से अधिक चुनौतियापूर्ण हो जाता है। विद्यार्थी अब केवल निष्क्रिय श्रोता नहीं है। ये एक सक्रिया भागीदार हाने की उम्मीद करते हैं, और कक्षा में महत्वपूर्ण और सम्मानित महसूस करने की आवष्यकता होती है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन के लिए धैर्य, योजना और परिपेक्ष्य की आवष्यकता होती है।

वर्तमान प्रथाओं के अनुसार शिक्षक के लिए नई कक्षा प्रबंधन प्रणाली को अपनाना कठिन है। यह उनके लिए एक बड़ा चौलेज है लेकिन उनके पास और कोई रास्ता नहीं है।

4. पाठयक्रम

जब शिक्षण और पाठयक्रम पाठ्य पुस्तकों और कक्षाओं तक सीमित थे, तब शिक्षण शायद बहुत कम चुनौतीपूर्ण आज आधुनिक शिक्षा गतिषील पाठ्यक्रम की मांग करती है, जिससे एक छात्र

के समग्र विकास के उद्देष्य से सामग्री, दक्षता और आवष्यक कौषल शामिल हैं, जो केवल शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। शिक्षकों को छात्र—केंद्रित पाठ्यक्रम बनाने की आवष्यकता होती है, जो न केवल उनके सीखने के हितों और क्षमताओं को शिखर पर पहुंचाता है, बल्कि महत्वपूर्ण, रचनात्मक और संज्ञानात्मक सोच भी पैदा करता है, जो आजीवन कौशल विकास के लिए आधार के रूप में कार्य करता है। इसलिए शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रों और उनकी सीखने की योजनाओं के साथ मिलकर एक पाठ्यक्रम बनाएँ। छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए नियमित रूप से इसकी प्रभावशीलता और अद्यतन की समीक्षा करें। यह शिक्षकों के लिए एक अलग तरह की चुनौती है क्योंकि इसमें विभिन्न कौशल की आवष्यकता होती है। शिक्षकों को ऐसी चुनौतियों को स्वीकार करना होगा।

5. वैश्विक जागरूकता

आज शिक्षा, केवल ज्ञान, अस्तित्व और करियर के लिए छात्रों को तैयार नहीं करती है। इसका उद्देश्य भविष्य के नेताओं और वैश्विक नागरिकों को एक एकीकृत दृष्टिकोण और समुदायों और विश्व के दृष्टिकोण के साथ बनाना है। इसलिए, शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रों में वैश्विक जागरूकता पैदा करें, जिससे उन्हें विश्व में पर्यावरणीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक घटनाओं को समझने में मदद मिलेगी और वे जो भूमिका निभाएंगे, या उसमें भूमिका निभा सकते है। सहिष्णुता, सहानुभूति, समानता, न्याय और समावेश जैसे विभिन्न मूल्यों से भी छात्रों को परिचित होना चाहिए।

इस चुनौती से निपटने के लिए शिक्षकों को साहित्य, भाषा, कला, भोजन, सस्कृति जैसे रचनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करवैष्िवक जागरूकता बढ़ानी चाहिए। वर्तमान घटनाओं पर नियमितवार्तालाप और उदाहरणों के माध्यम से जागरूकता, सहानुभूति और निष्पक्षता बनानी चाहिए।

इस सदी के शिक्षक के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण काम है क्योंकि चीजें तेजी से बदल रही हैं लेकिन शिक्षक इससे बच नहीं सकते हैं। इसलिए यह उनके लिए एक बड़ी चुनौती है कि वे हर बार इसका सामना करने जा रहे हैं।

इस वर्तमान परिदृष्य में जहां शिक्षकों के समाने बहुत सारी चुनौतियां है, वहा एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार उन्हें समाधान खोजने में मदद कर सकते हैं। शोधकर्ता को लगता है कि शिक्षकों की भविष्योन्मुखी चुनौतियों के लिए एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार प्रासंगिक और प्रभावी हो सकते हैं। इसलिए शोधकर्ता भविष्योन्मुखी चुनौतियों के संदर्भ में डॉक्टर अब्दुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना चाहता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व एवं आवश्यकता

किसी भी समाज में और किसी भी राष्ट्र के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा एक प्रमुख भूमिका निभाती है। वर्तमान युग से आगे बढ़ने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। इस युग में मानव ने जो भी उपलब्धि हासिल की है वह शिक्षा की खोज के बिना असंभव है। शिक्षा विकसित देशों की पहली प्राथमिकता है। इसलिए, इन देशों का विकास बहुत तेजी से और व्यवस्थित तरीके से हुआ है। उन देशों में जहाँ शिक्षा का विस्तार सीमित है, उनका विकास भी सीमित है। शिक्षा अपने आप में विकास है। इसलिए लोकतंत्र और विकास के बेहतर प्रबंधन के लिए हम शिक्षा की आवष्यकता को अस्वीकार नहीं कर सकते। शिक्षा राष्ट्र के विकास के चरणों में मानव संसाधन विकास और सषक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण है। किसी भी शिक्षा प्रणाली में प्रबंधन, इंजीनियरिंग, चिकित्सा इत्यादि को शामिल करने वाली उच्च शिक्षा ज्ञान, मूल्यों और कौशल विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाती है और इस प्रक्रिया में राष्ट्र की वृद्धि और उत्पादकता को बढ़ाती है।

यह केवल शिक्षा है जो उन लोगों का पोषण कर सकती है जो मानव मूल्यो और राष्ट्रीय नागरिकता सहित राष्ट्र निर्माण क्षमताओं और क्षमताओं से प्रशिक्षित है। कोई भी लोकतांत्रिक देश

जो लोकतंत्र के लिए दूनिया में अपना उच्च स्थान बनाए रखना चाहता है, उसे शिक्षा के बारे में सोचना होगा। यह स्वतंत्रता–सोचने की स्वतंत्रता, जीने की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत विकास के लिए स्वतंत्रता प्रदान करता है। वह इंसान को गलत कामों के रोकता है और सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों के साथ धार्मिक जीवन की ओर ले जाता है।

विभिन्न लोगों ने अलग–अलग शब्दों और अवधारणाओं में शिक्षा को परिभाषित किया है। प्राचीन भारत में, शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा (शिक्षक–शिष्य परंपरा) के संदर्भ में थी। उस समय सींखने का पीछा किया गया था, अपने लिए नहीं, बल्कि धर्म के हिस्से के रूप में। यह जीवन के अंतिम छोर के लिए एक साधन के रूप में मांगा गया था, अर्थात् मोक्ष। शिक्षा का उद्देष्य ज्ञान और नैतिक मूल्यों और नैतिकता का विकास करना था। भारत में 20 वीं शताब्दी में, कई भारतीय विचारकों और शिक्षाविदों ने शिक्षा के अर्थ पर विचार किया। महात्मा गांधी ने शिक्षा को बच्चे के शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ के रूप में सर्वागीण एकत्र करने के बजाय सार्थक होनी चाहिए। यह मानव–निर्माण, जीवन–निर्माण और विचारों का वर्णन करने वाले आधुनिक विचारक और दार्शनिक के रूप में माना जाता है। उन्होंने 21 वीं सदी और जीवन जीन के आधुनिक समय के बारे में विस्तार से बताया। वह एक दूरदर्शी व्यक्ति थे और हमेशा विकसित राष्ट्र के भविष्य के परिदृष्य के बारे में सोचते थे, जो उनके अनुसार है, केवल सभी संभव है जब सभी के लिए उचित और पर्याप्त शिक्षा हो।

अब्दुल कलाम उन विशिष्ट विचारकों में से एक थे जिन्होंने अपने प्रमुख विचारों को राष्ट्रीय, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोणों पर विचार से बताया। उनकी बड़ी उपलब्धियों ने विज्ञान और प्रौद्यागिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बुलंद किया। यद्यपि वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एक व्यक्ति थे और शोध के क्षेत्र में सक्रिय रूचि रखते थे, वे एक प्रसिद्ध विचारक और दूरदर्शी विचारों और विचारों के काफी लेखक थे। शिक्षा के पहले के विचारकों और दार्शनिकों ने शिक्षा पर विभिन्न दृष्टिकोणों को विस्तार से बताया है। दूसरे तरीके से, अब्दुल कलाम ने आधुनिक शिक्षा

प्रणाली और इंसान की आवश्यकता, समाज के लिए, अर्थव्यवस्था के लिए औरे देश और राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया है। उन्होंने अपने भाषणों और किताबों में शिक्षा के बारे में बहुत उत्सुक विचार प्रस्तुत किए थे। ये शैक्षिक विचार शिक्षा की बेहतरी और देश के हर नुक्कड़ में इसके विस्तार के लिए महत्वपूर्ण दिशा और सुझाव है। शोधकर्ता ने इन निर्देशों और विचारों को अपने लिए महत्वपूर्ण पाया और इसे पीएचडी अध्ययन की शोध समस्या के रूप में चुना है।

शोधकर्ता को साहित्य और शिक्षा के दर्शन में गहरी रूचि रही है। महान शैक्षिक विचारकों और दर्शनिकों के लेखन शोधकर्ता के रूचि का क्षेत्र रहा है। और वह दृढ़त्ज्ञ सोचता है। कि विभिन्न विचारक और शिक्षाविद् शिक्षा के विकास में मदद कर सकते है। शैक्षिक विकास, शैक्षिक नियोजन, वृद्धि और शिक्षा में सुधार, आदि के सिद्धांत और सिद्धांत नई और अभिनव दिशाएं और सुझाव प्रदान कर सकते है, जो यदि उचित रूप से उपयोग किये जाते हैं, तो राष्ट्रीय को अधिकसे अधिक विकास और उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते है। अब्दुल कलाम अपनी तरह के व्यक्तित्व के साथ–साथ दूरदर्शी और वैज्ञानिक भी थे। उनके लेखन में, कोई भी किसी भी प्रणाली के भविष्य के विकास के लिए दिशा–निर्देश पा सकता है। उन्होंने अपने विचारों को भारत की वर्तमान स्थितियों और भविष्य के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए दिए है। उनके विचार देश के प्रत्येक व्यक्ति और सरकारों के लिए भी बहुत ही निर्देशनात्मक और विचरोत्तेजक हैं। इसलिए, शोधकर्ता ने अपने शोध के लिए इस विशय का चयन करने का निर्णय लिया। वर्तमान अध्ययन का उद्देष्य अब्दुल कलाम के प्रत्यक्ष विचारों और दृष्टिकोणों को प्राप्त करना है जो शिक्षा और इसकी प्रणाली से संबंधित हैं। शोधकर्ता ने भविष्योन्मुखी चुनौतियों के संदर्भ में डॉक्टर अब्दुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना चाहता है जैसा कि एपीजे अब्दुल्ल कलाम के लेखन में परिलक्षिप्त होता है।

<u>संदर्भित साहित्य की समीक्षा</u>

Singh N (2012) [5] ने अपने शोध शीर्षक ''डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्ण एवं डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' का अध्ययन किया और पाया कि दोनों चिंतकों ने शिक्षा प्रणाली में समय अनुसार परिवर्तन का आग्रह किया है।

Ediwn (2014) [2] ने अपने शोध शीर्षक " The auto biographies of APJ Adul Kalam" पर एक अध्ययन किया और पाया कि ''एपीजे अब्दुल कलाम की आत्मकथाएँ'' समग्र व्यक्तित्व को दर्शाती है एवं कलाम का **व्यक्तित्व विंग्स ऑफ फायर टर्निंग पॉइंट्स और ग्राइडिंग** में पाया है। इस प्रकार, यह अध्ययन साबित करता है कि कलाम एक जीवनी लेखक है।

Chauhan (2017) [1] ने अपने शोध शीर्षक " A study of thinking on education of APJ Abdul Kalam" पर एक अध्ययन किया और पाया कि विज्ञान, शिक्षा और समाज के लिए अमूल्य योगदान है। डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम एक व्यावहारिक एवं प्रबुद्ध व्यक्ति और रचनात्मक विचारक थे। वह पहले शैक्षिक विचारक थे जिन्होंने स्वायत्त षिक्षार्थियों का विचार प्रदान किया था।

Dodiya (2017) [3] ने अपने शोध शीर्षक " A study of educational thought as relected in APJ Abdul Kalam" पर एक अध्ययन किया और पाया कि डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम अनुसार शिक्षा की अवधारणा है– ''शिक्षा रचनात्मक, कुषल, जानकार, सक्षम और प्रतिबद्ध व्यक्तियों को विकसित करने के लिए है जो किसी भी निरंतर भी आर्थिक और राजनीतिक विकास की आवश्यकता होती है। इसकी मुख्य्य उद्देष्य युवा दिमाग को इस तरह से तैयार करना है कि वे आजीवन स्वयत्त सीखने वाले बनें''

Rupainwar (1994) [4] ने अपने शोध शीर्षक " The educational thoughts and ideas of APJ Abdul Kalam" पर निष्कर्ष निकाला कि कलाम ने मूल्यों और आध्यात्मिकता के साथ विज्ञान पर आधारित शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कप्यूटर शिक्षा के प्रसार और नवाचार पर भी प्रचार किया। कलाम के अनुसार, कौशल आधारित शिक्षा विकसित भारत के मिशन 2020 को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कलाम ने शिक्षा प्रणाली से जुड़े कुछ पहलुओं पर चर्चा की जिन

पर ध्यान देने की आवष्यकता है। शिक्षा के संबंध में समकालीन भारत के वर्तमान परिदृष्य को बेहतर बनाने के लिए कलाम द्वारा कुछ व्यावहारिक विचार भी प्रस्तावित किए गए है। कलाम के अनुसार सबसे सफल व्यक्ति वे होते है, जो उस विशय और कार्य का चयन करते है, जिसके लिए पास एक–दूसरे के विचार की परवाह किए बिना, योग्यता है।

<u>समस्या कथन</u>

भविष्योन्मुखी चुनौतियों के सन्दर्भ में डॉक्टर ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का ज्ञान–मीमांसात्मक अध्ययन।

<u>**शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण**</u>

1. **भविष्योन्मुखी चुनौतियों –** प्रस्तुत अध्ययन में भविष्य की चुनौती से तात्पर्य शिक्षकों एवं छात्रों के सम्मुख निकट में आने वाली चुनौतियों से है।
2. **शैक्षिक विचारों –** प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक विचारों से तात्पर्य डॉक्टर अब्दुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों से है जो वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिक है।
3. **ज्ञान–मीमांसात्मक –** ज्ञान–मीमांसात्मक का अर्थ शब्दों की उत्पत्ति एवं मूल पता लगाना है। यह समय के दौरान शब्दों के अर्थ में परिर्वतन का भी पता लगता है। अग्रेजी में इस शब्द का अर्थ “ Etymology” है। यह ग्रीक शब्द “ etomos” से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ सत्य है। वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के संदर्भ में डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करेगा।
4. **विश्लेषण अध्ययन –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में विश्लेषणात्मक अध्ययन से वर्तमान वास्तविक विधि के ढाँचे का तार्किक और वैज्ञाानिक ढंग से परीक्षित करने के प्रयास का एक ढंग है। इसके द्वारा वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के संदर्भ में डॉक्टर एपीजे अब्दुल के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा।

<u>**शोध के उद्देश्य**</u>

1. डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के भविष्य की चुनौतियों का विवरण करना।
2. डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के सम्पूर्ण शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
3. डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के अनुसार ज्ञानमीमांसात्मक विचारों की व्याख्या करना।
4. भविष्योन्मुखी चुनौतियों के सम्बन्ध में डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के अनुसार ज्ञानमीमांसात्मक तत्व की सर्थकता की समीक्षा करना।

5. वर्तमान तथा भविष्योन्मुखी शिक्षा प्रणाली पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षणिक निर्णय के संबंध का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

ऐतिहासिक विधि– इसमें व्यक्ति के जीवन की प्रमुख घटनाओं को देखा समझा जा सकता है। तथा इस अध्ययन में डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम की प्रमुख घटनाओं वे कार्यों को देखने का प्रयास लिया जायेगा।

दार्शनिक विधि– यह ऐतिहासिक विधि की उपविधि है फिर भी विशेष क्षेत्र होने के नाते इसे अलग माना जाता है इसके अंतर्गत डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के दार्षनिक विचार शैक्षिक विचार मानवीय मूल्य नैतिक मूल्य राजनीतिक मूल्य एवं प्रशासकीय मूल्यों का अध्ययन करके उनकी उपयोगिता की जांच की जाएगी तथा वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के संदर्भ में डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा।

वर्तमान अध्ययन प्रारूप

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनकी उपयोगिता तथा प्रासंगिकता का विश्लेषण वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के संदर्भ में किया जाएगा।

आंकडा संग्रहण विधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के आकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

प्रथम स्रोत : डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के लेखन और पत्राचार आत्मकथाएं स्व लिखित पुस्तकें, लेख दिए गए भाषणों एवं साक्षात्कार आदि स्रोतों का अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीय स्रोत : द्वितीय स्रोत के अन्तर्गत डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम पर विभिन्न लेखकों के द्वारा लिखी गई पुस्तकों, संपादकीय एवं टीवी कार्यक्रमों को लिया जाएगा।

शोध का परिसीमन

शोधकर्ता वर्तमान अध्ययन को निम्नानुसार परिसीमन करेगाः

1. शोधकर्ता गुणात्मक वर्गीकरण और सूचना का विश्लेषण करेगा।

2. वर्तमान अध्ययन में एपीजे अब्दुल कलाम के विचार ओर दृष्टिकोण प्राथमिक और माध्यमिक आंकड़ों से प्राप्त किए जाएगें।
3. वर्तमान अध्ययन में एपीजे अब्दुल कलाम से संबधित उपलब्ध सामग्रियों तक सीमांकित किया जाएगा।
4. वर्तमान अध्ययन केवल डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक सोच को निर्दिष्ट करेगा।
5. वर्तमान अध्ययन को आंकड़ों के गुणात्मक विश्लेषण तकनीक में सीमांकित किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] Chauhan, K., R. (2017).*A study of thinking on education of APJAbdul Kalamstudy.* Doctoral thesis, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar.Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/267696 .

[2] Edwin,J., A. (2014). *A The auto biographies of A P J Abdul Kalam*. Doctoral thesis,Anna University, Chennai. Retrieved fromhttp://hdl.handle.net/10603/48808.

[3] Dodiya, R., S. (2017). *A study of educational thoughts as reflected in A P JAbdul Kalam's writings.* Doctoral thesis, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/204756 .

[4] Rupainwar, A. (1994). *Educational thoughts and ideas of A P J Abdul Kalam: An analytical study*. Doctoral thesis,Integral University.Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/114131.

[5] Singh, N. (2012*). Dr Sarvpalli Radhakrishna evam Dr.A P J Abdul Kalam keShaikshikvicharo ka tulnatmak Adhyayan*. Dr. RammanoharLohia Avadh University, Faizabad. Retrieved fromhttp://hdl.handle.net/10603/236418 .